इंद्रप्रस्थ पर राजतिलक होने एवं राजा की गद्दी संभालने के बाद ही युधिष्ठिर को बुरे सपने आने प्रारम्भ हो गए । उन सपनों में युद्ध की हिंसा, अनाथ बच्चों का विलाप और विधवाओं का रुदन एवं बुरी तरह बिलखते लोग दिखाई देने लगे । लगातार आ रहे इन स्वप्नों के कारण युधिष्ठिर परेशान रहने लगे जिस का कारण अन्य चारों भाइयों द्वारा ज़ोर डालने पर उन्हों ने बताया। कृष्णजी पांडवों के गुरु थे । तब पांडवों ने अपने गुरु श्री कृष्ण से इसका कारण पूछा । कृष्णजी ने बताया कि युद्ध के कारण पांडवों के सिर पर हिंसा और बन्धुघात का महापाप है । इसके लिये एक अश्वमेघ यज्ञ श्री कृष्णजी ने बताई जिस में पूरी पृथ्वी सहित साधु, सन्तों, ऋषियों, देवताओं को भी भोजन कराने की बात उन्हों ने कही ।